IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 धर्मेश श्रीवास्तव
डॉ0 अजय कुमार गोविन्द राव

सारांश

अध्ययनकर्त्ता द्वारा सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उद्देश्य में क्षेत्र के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता ने सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है। अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रयागराज जनपद के के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं को जनसंख्या माना है। अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रयागराज जिले माध्यमिक स्तर के 5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया तत्पश्चात् शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा कर उक्त विद्यालयों में अध्यापनरत् 100 शिक्षक–शिक्षिकाओं (50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों) से चयन किया गया है जिसमें 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी शिक्षकों को लिया गया है। शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि को मापने के लिए डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित व्यवसायिक सन्तुष्टि मापनी (Job Satisfaction Scale) का प्रयोग किया गया है। परिणाम एवं निष्कर्ष निकालने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि– सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है जबकि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयो में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है।

मुख्य शब्द– सरकारी, गैर सरकारी, माध्यमिक विद्यालय, शहरी, ग्रामीण, शिक्षक, व्यवसायिक संतुष्टि, अन्तर।

भूमिका

किसी भी शिक्षण संस्थान की प्रतिष्ठा उसमें कार्यरत (सेवारत) शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। किसी भी समाज में समय और स्थान से परे शिक्षक को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है। उससे आशा की जाती है कि वह छात्रों के लिए अत्यधिक प्रेरणा व संवेगात्मक स्रोत बने। यह शिक्षकों की निष्ठा तथा बलिदान ही है जो उनको समाज में अद्वितीय सम्मान दिलाते हैं। किन्तु यक्ष प्रश्न यह है कि ऐसे शिक्षक कहाँ और कैसे मिलेगें? सुयोग्य शिक्षकों की कमी उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक अवरोध है। मेधावी युवा पीढ़ी के लिए, उनमें प्रेरणा उत्पन्न करने के लिए तथा उनके अन्दर वांछनीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए शिक्षण व्यवसाय को उच्च आकांक्षापूर्तिकर्ता होने की आशा की जाती है। शायद ही कोई इस बात से इन्कार कर सकता है कि शिक्षण, एक व्यवसाय के रूप में समर्पण एवं सेवा भाव की मांग करता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई व्यक्ति प्राथमिक स्कूल का शिक्षक है अथवा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, दोनों में ही अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शिक्षक के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि – ''किसी समाज में शिक्षकों के स्तर से उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का पता लगता है। कहा जाता है कि एक राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है। इस दृष्टिकोण को सम्मुख रखते हुए समाज व राष्ट्र के विकास व उसकी संवृद्धि में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता प्रदान की गई है। शिक्षक अपनी भूमिका का अच्छी तरह निर्वाह कर सके इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उसकी स्थिति में सुधार के लिए कुछ उपाय बताए गये हैं और उसी के साथ उसके दायित्व भी निर्धारित किये गये हैं। शिक्षकों की भूमिका के महत्व को सामने रखते हुए शासन व समुदाय द्वारा ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न करने पर बल प्रदान किया गया है जिनसे उनको रचनात्मक व

सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन प्राप्त हो सके और शिक्षा के क्षेत्र में वे महत्वपूर्ण नवीन प्रयोग करने में समर्थ हो सके।''

वर्तमान समय में बढ़ती हुए जनसंख्या एवं शिक्षा के निजीकरण से जहाँ एक तरह माध्यमिक विद्यालयों की बाढ़ सी आ गयी है वहीं शिक्षकों की गुणवत्ता में कमी भी देखने को मिल रहे है। वर्तमान निजीकरण होने से सरकार द्वारा माध्यमिक विद्यालयों को मान्यता प्रदान किया जा रहा है जिससे वित्तीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों की स्थापना बहुत तेज से हो रही है एवं उनकी देख–रेख एवं शिक्षकों की नियुक्ति प्रबन्धकीय स्तर पर हो रही है जिससे विद्यालय में सरकारी शिक्षकों को कमी देखने को मिल रही है। सरकारी शिक्षकों की कमी के कारण शिक्षा का स्तर नीचे आता जा रहा है। बड़े–बड़े निजी विद्यालयों की स्थापना तो किया जा रहा, उसमें सारी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखा जा रहा है लेकिन प्रबन्धकों द्वारा कम वेतन देने के चक्कर में सरकारी शिक्षकों की जगह गैर सरकारी शिक्षकों की नियुक्ति किये जा रहे है, जिससे शिक्षकों को बच्चों को किस प्रकार पढ़ाना है और बच्चों तथा शिक्षा की गुणवत्ता को बिना ध्यान दिये शिक्षा प्रदान किये जा रहे है।

शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि विद्यालय व शिक्षा के विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। व्यवसायिक संतुष्टि वह स्थिति है जो कि शिक्षक को अपने कार्य के सन्दर्भ में प्राप्त होने वाले आनन्द के मूल्यों का अनुमान देती है। व्यवसायिक संतुष्टि व्यक्ति के कार्य के समान विभिन्न पहलुओं जैसे– वेतन, पदोन्नति के अवसर, अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति दृष्टिकोण आदि के कारण उत्पन्न मानसिक संवेगात्मक स्थिति है। किसी व्यवसाय में संतुष्टि एक अति आवश्यक तत्व है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से जितना अधिक संतुष्ट होगा उतने ही प्रभावशाली रूप से अपने कार्य को पूरा करेगा। यही बात शिक्षक के व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सत्य है कि यदि एक शिक्षक का अपने शिक्षण व्यवसाय में संतुष्टि की भावना दृष्टिगत होगी तब वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह सही प्रकार से कर पायेगा।

जहाँ तक शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि के अर्थ का प्रश्न है, यह लिखना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि पर पूरे विश्व का भविष्य निर्भर है। शिक्षक हो या शिक्षिका कार्य से मिलने वाले सन्तोष पर ही भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की कामना की जा सकती है। यदि शिक्षक अपने कार्य में असन्तुष्ट होगा तो अपने दायित्वों को वह भली प्रकार नहीं निभा पायेगा। इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ेगा और इसके उपरान्त समाज का पतन अवश्यम्भावी है। अतः शिक्षक युग निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट होंगे तो निश्चित ही ऐसे समाज का निर्माण होगा जो स्वस्थ्य मस्तिष्क और बौद्धिक प्रतिभा का धनी होगा।

वर्तमान समय शिक्षकों का शिक्षा के प्रति समर्पण भाव का कम होना स्वाभाविक है। अतः अध्ययनकर्त्ता ने अपने अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास करेगी कि क्या माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर होता है, और यह अन्तर किस स्तर तक होता है?

समस्या कथन

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया हैं–

1. क्षेत्र के आधार पर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. क्षेत्र के आधार पर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. क्षेत्र के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जायेगा–

1. क्षेत्र के आधार पर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. क्षेत्र के आधार पर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. क्षेत्र के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता ने सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है, क्योंकि अध्ययन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि का पता लगाना है।

जनसंख्या

अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रयागराज जनपद के के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं को जनसंख्या माना है।

न्यादर्श

अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रयागराज जिले माध्यमिक स्तर के 5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया तत्पश्चात् शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा कर उक्त विद्यालयों में अध्यापनरत् 100 शिक्षक–शिक्षिकाओं (50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों) से चयन किया गया है जिसमें 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी शिक्षकों को लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण का चयन

शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि को मापने के लिए डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित व्यवसायिक सन्तुष्टि मापनी (**Job Satisfaction Scale**) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्राविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम एवं निष्कर्ष निकालने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. क्षेत्र के आधार पर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–41

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	N	M	S.D.	$D=(M_1 \sim M_2)$	σ_D	t-value	सारणी मान
1.	शहरी	25	165.25	20.98	6.44	5.25	1.23	2.01 df=48
2.	ग्रामीण	25	171.72	15.79				

*0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक

तालिका–1 प्रदर्शित करती है कि उपरोक्त दोनों समूहों के आधार पर आगणित टी–अनुपात का मान 1.23 है। परिकल्पना परीक्षण हेतु निर्धारित सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वतंत्रांश 48 के लिए सारणी मान 2.01 है। स्पष्ट है कि प्राप्त टी–अनुपात क्रांतिक मान से कम है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का निषेध करता है। अतः विश्लेषणोपरान्त स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में समान व्यवसायिक संतुष्टि में है।

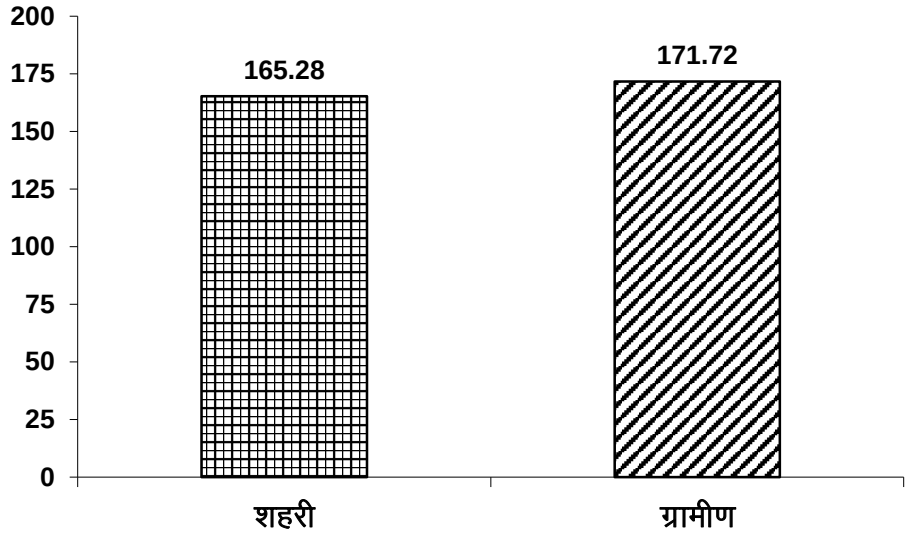

2. क्षेत्र के आधार पर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–2

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	N	M	S.D.	D=(M_1~M_2)	σ_D	t-value	सारणी मान
1.	शहरी	25	157.80	9.12	2.40	3.33	0.72	2.01 df=48
2.	ग्रामीण	25	155.40	13.95				

*0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक

तालिका–4.4 प्रदर्शित करती है कि उपरोक्त दोनों समूहों के आधार पर आगणित टी–अनुपात का मान 0. 72 है। परिकल्पना परीक्षण हेतु निर्धारित सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वतंत्रांश 48 के लिए सारणी मान 2.01 है। स्पष्ट है कि प्राप्त टी–अनुपात क्रांतिक मान से कम है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का निषेध करता है। अतः विश्लेषणोपरान्त स्पष्ट है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में समान व्यवसायिक संतुष्टि में है।

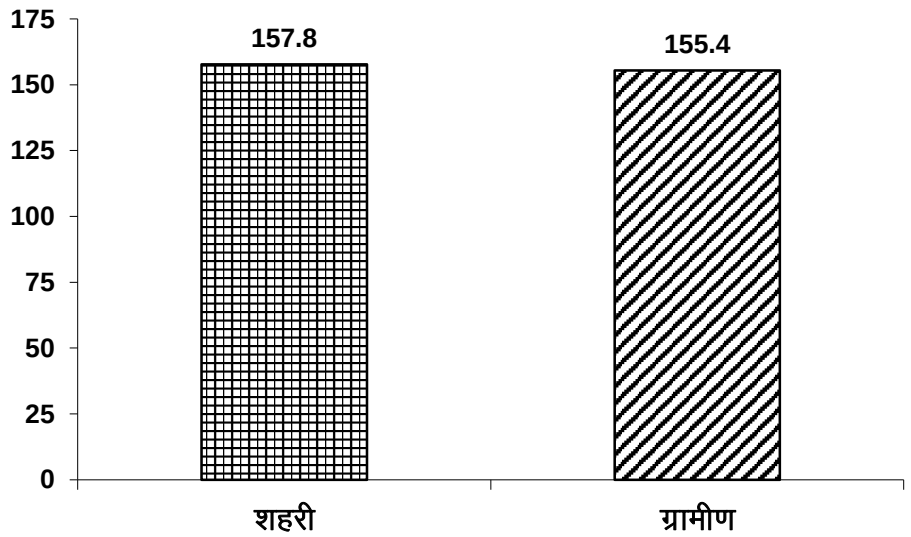

3. क्षेत्र के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–3

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श		N	M	S.D.	D=(M_1~M_2)	σ_D	t-value	सारणी मान
1.	सरकारी	शहरी	25	165.28	20.98	7.48	4.57	1.63	2.01 df=48
2.	गैर सरकारी	शहरी	25	157.80	9.12				
1.	सरकारी	ग्रामीण	25	171.72	15.79	16.32	4.21	3.87*	2.01 df=48
2.	गैर सरकारी	ग्रामीण	25	155.40	13.95				

*0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका–4.6 प्रदर्शित करती है कि उपरोक्त दोनों समूहों के आधार पर आगणित टी–अनुपात का मान क्रमशः 1.63 एवं 3.87 है। परिकल्पना परीक्षण हेतु निर्धारित सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वतंत्रांश 48 के लिए सारणी मान 2.01 है। स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों के मध्य प्राप्त टी–अनुपात क्रांतिक मान से अधिक है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का प्रतिरोध करता है। अतः विश्लेषणोपरान्त स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयो में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है। जबकि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों के मध्य प्राप्त टी–अनुपात क्रांतिक मान से कम है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का निषेध करता है। अतः विश्लेषणोपरान्त स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि में समानता है।

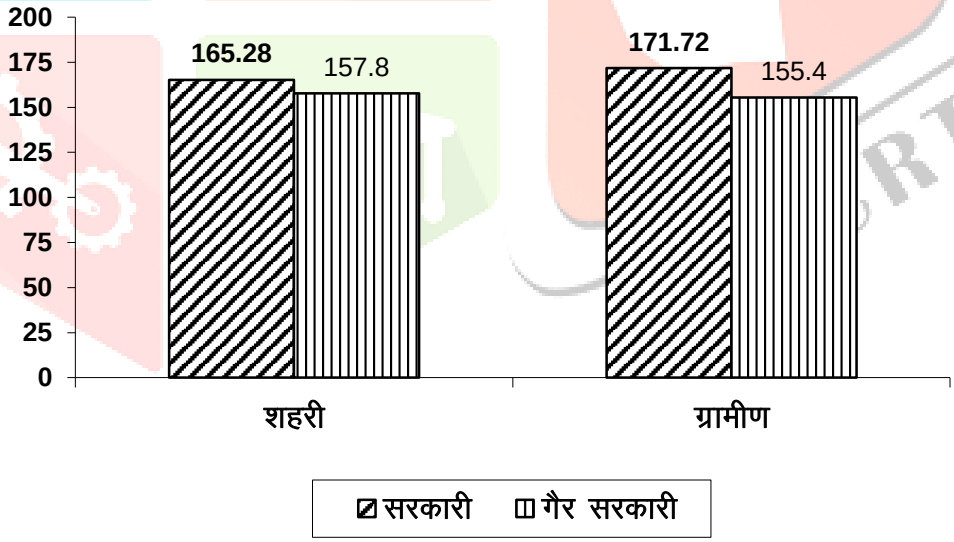

निष्कर्ष–

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में समान व्यवसायिक संतुष्टि में है।
2. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में समान व्यवसायिक संतुष्टि में है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर है अर्थात् सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयो में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है। जबकि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर नहीं है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि में समानता है।

सुझाव–

प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त निष्कर्ष में पाया गया कि **सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि में अन्तर पाया गया।** अतः कह सकते हैं कि शिक्षकों में अपने शिक्षण कार्य के प्रति जो उनकी व्यवसायिक संतुष्टि है उनमें विभिन्नता प्रदर्शित होती है और यह कारक कार्य की स्थितियों, वेतन, पदोन्नति, संस्थागत योजनाएं, भविष्य योजना, अन्य साथी अध्यापकों से सम्बन्ध संस्थाओं के मालिकों व प्रधान की भूमिका आदि सभी अवस्थाएँ शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि को बढ़ाने या कम करने में अपना स्थान रखती है। **राज, तिलक एवं ललिता (2013)** के परिणाम गैर सरकारी स्कूलों के अध्यापक वेतन के मामले में ज्यादा संवेदनशील होते है। सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक दोनों ही संगठन के प्रति असंतुष्टि की राय को रखते है। सरकारी और गैर सरकारी दोनों अध्यापक के मध्य भविष्य के कैरियर के अवसर को लेकर असंतुष्टि की भावना रहती है तो उनमें संतुष्टि की भावना को बढ़ाने के लिए प्रबंधन को शिक्षकों के भविष्य को लेकर अवसर प्रदान करने की कोशिश करनी चाहिए।

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के कम वेतन, माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक होने के कारण उनकी कोई पदोन्नति का रास्ता नहीं होता है, अधिक निजी विद्यालयों में अधिक सेवा शर्तों के साथ कम करना शिक्षकों की मजबूरी होती है वहीं संस्थागत योजना एवं नीतियाँ प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य द्वारा बनायी जाती है जिसका तनाव शिक्षकों पर होता है वहीं ऐसे शिक्षकों को सामाजिक एवं पारिवारिक तनाव भी झेलना पड़ता है, जिसके कारण उनमें व्यवसायिक संतुष्टि की विमाओं का मध्यमान सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा कम पाया गया। गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या अधिक से अधिक रखने एवं अधिक फीस वसूलने की प्रक्रिया दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है जिससे गैर सरकारी शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य द्वारा दबाव बनाया जाता है वहीं सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों पर अपने नौकरी को लेकर कम तनाव होता है जिससे वे छात्रों एवं सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध रखने का कोई तनाव नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अली यासिन एवं अन्य (2016). टीचर मोटिवेशन एण्ड स्कूल परफार्मेन्स, द मेडिएटींग इफेक्ट ऑफ जॉब सैट्सिफैक्शन : सर्वे फ्राम सेकेण्डरी स्कूल्स इन मोगादिशु, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड सोशल साइंस,* वॉ0 3, नं0 1, पृ0 24–38
- एम0 दीक्षित (1986). प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको के मध्य कृत्य–संतोष का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच0डी0 एजुकेशन, लखनऊ विश्वविद्यालय, एम0बी0 बुच, फोर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृ0 932
- एच. शामिना (2014). इम्पैक्ट ऑफ जॉब सेटिसफेक्शनऑन प्रोफेशनल कमिटमेन्ट इन हायर एजूकेशन, *ग्लैक्सी इण्टिमा ओनल इण्टरडिसिपलनरी रिसर्च जर्नल,* वॉल्यम–2(2). पृ0 1–11।
- कुमार, कृष्णा (2014). रिलेशनशीप बिटविन एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ फिजिकल एजूकेशन टीचर्स, *इण्टरनेशल रिफ्रिरीड, दर्पण इण्टरनेशनल रिसर्च एनॉलसिस,* वॉल्यूम–2, इश्शू–2, पृ0 47–50।
- कुमारी, बबिता (2021). वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों के तनाव एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित अध्ययन, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय). प्रयागराज।
- कुमारी, ललिखा, वाई. (2010). ए स्टडी ऑफ एडजेस्टमेन्ट, जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव प्रॉब्लम्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल हेड मास्टर, शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, आन्ध्र प्रदेश।
- तिवारी, रंजना (2016). रींवा जिले में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की व्यवसायिक सन्तुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट,* 1(4), पृ0 01–03।
- नदीम, एन.ए., पूजू, अहमद जावेद एवं जहूर, नादिया (2013). ए स्टडी ऑफ पर्सनालिटी एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सस्टिफैक्शन ऑफ रूरल एण्ड अर्बन सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स, स्टैडर्ड जर्नल ऑफ एजूकेशन ऐसे, वाल्यूम–1(1)।
- मुछाल, महेश कुमार एवं चन्द, सतीश (2016). बी0पी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी,* 6(1), पृ0 127–132।
- सिंह, त्रिवेणी (1988). शिक्षकों के कृत्य–संतोष और उनकी सामाजिक– आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शिक्षण निपुणता का अध्ययन, पी–एच0डी0 एजुकेशन, अवध विश्वविद्यालय, एम0बी0 बुच, फोर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृ0 1489
- सिंह, दीप्ति (2018). शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *रिसर्च मैग्मा एन इण्टरनेशनल मल्टीडिसिपलनरी जर्नल,* 1(12), 2018, पृ0 01–08।